Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार गोपीनाथ शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मानसी पंडया* डॉ. विनीता श्रीमाली**

*** शोधार्थी (इतिहास) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राज.) भारत**
****सहायक आचार्य (इतिहास) माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राज.) भारत**

प्रस्तावना – प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा राजस्थान के इतिहास लेखन की परंपरा में एक अत्यंत प्रतिष्ठित और सम्मानित नाम हैं। उन्हें राजस्थान के जीवित इतिहासकारों में सर्वाधिक ख्याति प्राप्त विद्वानों में गिना जाता है। वे उस गौरवशाली इतिहासकार–पीढ़ी के प्रतिनिधि थे, जिसमें दशरथ शर्मा, सत्य प्रकाश, एम. एल. शर्मा तथा रघुबीर सिंह जैसे प्रसिद्ध विद्वान सम्मिलित थे। यह वह दौर था जब राजस्थान के इतिहास के अध्ययन में नए दृष्टिकोण, नई शोध–पद्धतियाँ और स्रोत–आधारित इतिहास लेखन का विकास हो रहा था।प्रोफेसर शर्मा का बौद्धिक और शैक्षणिक विकास उन महान इतिहासकारों की परंपरा से जुड़ा हुआ था, जिनमें के. आर. कानूनगो, जदुनाथ सरकार, मोहम्मद हबीब तथा ए. एल. श्रीवास्तव जैसे विद्वानों का विशेष स्थान था। इन विद्वानों के मार्गदर्शन और प्रेरणा ने उनके शोध–कार्य को एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया। विशेष रूप से उन्होंने अपने पीएच.डी. शोध–प्रबंध 'Mewar and the Mughal Emperors' (प्रथम प्रकाशन 1952, द्वितीय संस्करण 1962) को अत्यंत गंभीर शोध और स्रोत–समीक्षा के आधार पर तैयार किया। यह कृति मेवाड़ और मुगल साम्राज्य के राजनीतिक, कूटनीतिक तथा सांस्कृतिक संबंधों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है और आज भी इस विषय पर एक महत्वपूर्ण संदर्भ–ग्रंथ मानी जाती है।इस शोध–प्रबंध के प्रकाशन ने प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा को तत्काल राजस्थान के इतिहासकारों की नई पीढ़ी के अग्रणी विद्वानों की श्रेणी में स्थापित कर दिया। उनकी विशेषता यह थी कि उन्होंने इतिहास लेखन के लिए केवल प्रचलित और प्रकाशित स्रोतों पर निर्भर रहने के बजाय ऐसे मूल स्रोतों का उपयोग किया जो लंबे समय तक उपेक्षित, अप्रकाशित या अज्ञात रहे थे। उन्होंने दुर्लभ पांडुलिपियों, अभिलेखागारों में सुरक्षित अप्रयुक्त दस्तावेजों, भूले–बिसरे पुरालेखों, ताम्रपत्रों, शिलालेखों तथा पुरातात्विक अवशेषों का स्वयं अध्ययन किया। साथ ही उन्होंने ऐतिहासिक स्मारकों, दुर्गों, मंदिरों और स्थापत्य अवशेषों का प्रत्यक्ष निरीक्षण कर अपने निष्कर्षों को अधिक प्रमाणिक और वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।[1] इतिहास के प्रति उनकी यह स्रोत–केंद्रित और अनुसंधानपरक दृष्टि राजस्थान के इतिहास लेखन में एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुई। उन्होंने न केवल अनेक नई ऐतिहासिक जानकारियों को प्रकाश में लाया, बल्कि इतिहास लेखन की वैज्ञानिक पद्धति को भी सुदृढ़ किया। इसी कारण प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा को राजस्थान के आधुनिक इतिहास लेखन का एक प्रमुख स्तंभ, शोधपरक इतिहास लेखन का प्रवर्तक तथा नई पीढ़ी के इतिहासकारों के लिए प्रेरणास्रोत माना जाता है।

राजस्थान के इतिहास लेखन की परंपरा में प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा का स्थान अत्यंत विशिष्ट और सम्माननीय है। उन्हें राजस्थान के ऐतिहासिक अध्ययन का अग्रदूत माना जाता है, जिन्होंने इस क्षेत्र के इतिहास को व्यवस्थित, प्रमाणिक तथा वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। उनके शोध एवं लेखन ने राजस्थान के इतिहास को एक स्पष्ट दिशा दी और उसकी सुदृढ़ आधारशिला स्थापित की।गोपीनाथ शर्मा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि उन्होंने इतिहास लेखन के लिए केवल फारसी इतिहासकारों के विवरणों पर निर्भर रहने की परंपरा को चुनौती दी। उन्होंने स्थानीय स्रोतोंकृजैसे ख्यातें, वंशावलियाँ, शिलालेख, ताम्रपत्र, लोक–साहित्य, अभिलेखीय दस्तावेज तथा पुरातात्विक साक्ष्यों– के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्हें इतिहास पुनर्निर्माण का विश्वसनीय आधार बनाया। उनके प्रयासों से राजस्थान के इतिहास के अनेक ऐसे पक्ष उजागर हुए, जो पहले उपेक्षित या अस्पष्ट थे।इसके अतिरिक्त, उन्होंने राजपूत शासकों के व्यक्तित्व, नीतियों और उपलब्धियों का मूल्यांकन अधिक संतुलित, वस्तुनिष्ठ और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया। जहाँ कर्नल टॉड के लेखन में कभी–कभी रोमांटिकता और अतिशयोक्ति का प्रभाव दिखाई देता है, वहीं गोपीनाथ शर्मा ने तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर राजपूत इतिहास को निष्पक्षता के साथ प्रस्तुत किया। परिणामस्वरूप उनका इतिहास लेखन न केवल अधिक विश्वसनीय सिद्ध हुआ, बल्कि उसने राजस्थान के अतीत को समझने के लिए एक नई और वैज्ञानिक दृष्टि भी प्रदान की।[2] डॉ. गोपीनाथ संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, डिंगल, गुजराती, मेवाड़ी, भील आदि भाषाओं के अच्छे जानकार थे जिससे इतिहास के मूल स्त्रोतों को समझने में सफल हो सके।[3]

वाइकाउन्ट हॉलडेन के इस कथन को भी विस्मृत नहीं करना चाहिए, जो गोपीनाथ जी पर सटीक बैठता है कि, 'इतिहासकार को फोटोग्राफर की तरह नहीं अपितु चित्रकार के सदृश्य होना चाहिए।' डॉ. गोपीनाथ शर्मा राजस्थान इतिहास के ऐसे नक्षत्र हैं जिन्होंने अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों से आधारभूमि का निर्माण किया तो दूसरी ओर उन्होंने भावी इतिहासकारों के लिए दिशा निर्देशन भी प्रदान किया।[4]

डॉ. गोपीनाथ शर्मा का जन्म 29 मार्च, 1908 को उदयपुर के ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे जिनका देहावसान उनके बाल्यकाल में हो गया।[5] परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए उन्होंने कुछ समय कथा वाचन भी किया। 10वीं उत्तीर्ण करने के बाद वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अर्थोपार्जन करने लगे। 1932–34 के मध्य

वे मेवाड़ स्कूल में मिडिल हेडमास्टर बने।[6] 1934 में 25 वर्ष की उम्र में उन्हें इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल के पद पर नियुक्ति प्रदान की गई। इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल के पद पर नियुक्ति होने के बाद उन्होंने स्कूलों का निरीक्षण घोड़े पर बैठकर गाँव-गाँव, नगर नगर किया, जिस तरह 100 वर्ष पूर्व टॉड ने घूम-घूम कर जो सामग्री एकत्रित की उसी प्रकार डॉ. गोपीनाथ ने ऐतिहासिक मन्दिर, ताम्रपत्र इत्यादि जो गाँव के लोगों के पास सुरक्षित थे, एकत्रित किये।[7]

डॉ. गोपीनाथजी ने 1937 में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की, इतिहास की पुस्तकें उन्होंने 'इम्पीरियल लाइब्रेरी कलकत्ता' के सदस्य बनकर प्राप्त की। एम.बी. कॉलेज में उनकी 40 रु. मूल वेतन व 35 रु. भत्तो के मासिक वेतन पर अस्थाई नियुक्ति हुई।[8] स्वतंत्रता प्राप्ति तक आते-आते गोपीनाथजी की ख्याति इतिहास विद् के रूप में हो चुकी थी। उनकी विद्धता के कारण राजस्थान विश्वविद्यालय ने इन्हें 1954 में 'बोर्ड ऑफ स्टडीज इन हिस्ट्री एण्ड आर्कियोलोजी' में सदस्य नियुक्त किया, वे इस बोर्ड के संयोजक भी रहे।[9] उदयपुर में रहते हुए डॉ. गोपीनाथ शर्मा के हिस्टोरिकल क्वार्टरली, आडियार लाइब्रेरी बुलेटिन, प्रोसिडिंग्स इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, प्रोसिडिंग्स इण्डियन हिस्टोरिकल रिकार्ड्स कमीशन, इत्यादि में उनके अनेक शोध पत्र प्रकाशित हुए।[10]

डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने 1963 में इतिहास और भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में कार्यभार ग्रहण किया।[11] 1975 में वे इसके पहले अवैतनिक निदेशक बने। डॉ. वी.एस. भटनागर के अनुसार उन्होंने मिडिल स्कूल के हैडमास्टर से लेकर प्रोफेसर एमेरिटस तक धीरे-धीरे गहरी ईमानदारी, मेहनत से अद्धितीय स्थान प्राप्त किया।[12] 1967 में उन्होंने मध्यकालीन भारत में सामाजिक जीवन पर डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की।

प्रोफेसर वी.एस.भटनागर लिखते हैं कि राजस्थान विश्वविद्यालय के भविष्य के एमेरिटस प्रोफेसर और प्रसिद्ध इतिहासकार का बचपन खुशहाल लेकिन छोटा रहा। उनके पिता, जो एक विद्धान संस्कृत पंडित थे, कम उम्र में ही चल बसे। इस अप्रत्याशित त्रासदी के परिणामस्वरूप, गोपीनाथजी ने अपने शुरुआती वर्ष भारी आर्थिक कठिनाइयों में बिताए। उन्हें सम्मानित लोगों द्वारा 'कथा' सुनाने के लिए आमंत्रित किया जाता था, जो उनके परिवार को जानते थे और उन्हें टोकन राशि भेंट करते थे। जैसे-जैसे वह बड़े हुए, उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और अपनी पढ़ाई जारी रखी, जबकि अपने परिवार के खर्चों और उच्च शिक्षा को पूरा करने के लिए कमाई भी करते रहे। 1932-34 के दौरान, उन्होंने मेवाड़ के एक मिडिल स्कूल के हेड मास्टर के रूप में कार्य किया और केवल पच्चीस वर्ष की आयु में, 1934 में स्कूलों के निरीक्षक नियुक्त किए गए। इस क्षमता में, वह मेवाड़ के दूरदराज के गांवों और कस्बों में स्थित स्कूलों का निरीक्षण करने के लिए घोड़े पर सवार होकर जाते थे। लगभग सौ साल पहले कर्नल जेम्स टॉड की तरह, वह हमेशा अज्ञात शिलालेखों, लगभग भूली हुई जीर्ण-शीर्ण मंदिरों, गांवों में रहने वाले परिवारों के पास मौजूद ताम्रपत्रों की तलाश में रहते थे और घटनाओं और स्थानों के बारे में जीवित मौखिक परंपराओं, दर्रों, पहाड़ी की चोटी पर स्थित गढ़ियों, दुर्गम जंगल से चारों ओर से ढका हुआ कोई मंदिर, एक भूली हुई छतरी, सूरज की रोशनी से चमकते और बरसात के मौसम में बारिश के पानी से धुले सती प्रस्तर स्तम्भों, और शासकों एवं प्रमुखों के बारे में किस्से-कहानियों को इकट्ठा करते थे।[13]

वे अक्सर अपनी सहज बुद्धि और कठिन प्रश्नों को कुछ गूढ़ शब्दों में हल करने के तरीके को प्रकट करते थे। उन्हें मेवाड़ी में संवाद करते हुए सुनना बहुत सुखद होता है। संस्कृत, डिंगल, गुजराती, मेवाड़ी बोलियों, भीली आदि के अच्छे ज्ञाता होने के साथ-साथ वे एक उत्कृष्ट स्मृति, एक सुखद सरल व्यक्तित्व और स्वाभाविक रूप से विनम्र स्वभाव के धनी थे, जिसे कोई भी सम्मान या प्रशंसा प्रभावित नहीं कर सकी।परिश्रम की एक व्यवस्थित आदत और एक स्वस्थ, छरहरे शरीर के साथ, जो पिछले पचास वर्षों के दौरान शायद ही बदला हो, गोपीनाथजी शर्मा ने अपने करियर के शुरुआती दौर में ही मूल स्रोतों पर महारत हासिल कर ली थी। यही कारण है कि आज प्राचीन काल (7वीं शताब्दी) से लेकर 1948 में राजस्थान में इसके विलय तक मेवाड़ के इतिहास के बारे में उनके ज्ञान को अंतिम शब्द (प्रामाणिक) माना जाता है।1937-52 के दौरान, गोपीनाथजी ने महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर में वरिष्ठ व्याख्याता के रूप में कार्य किया। 1952 से 1954 तक, वे महाराज कुमार कॉलेज, जोधपुर में इतिहास और राजनीति विज्ञान के प्रमुख और प्रोफेसर थे। यहाँ उन्होंने सूरज प्रकाश पुस्तकालय का भरपूर उपयोग किया, जो पांडुलिपियों के अपने समृद्ध संग्रह के लिए जाना जाता है।1955 में, डॉ. शर्मा पुन: महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर में विभागाध्यक्ष और प्रोफेसर के रूप में शामिल हुए। इस समय तक उनके कई शोध पत्र विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं जैसे इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली, अड्यार लाइब्रेरी बुलेटिन, प्रोसीडिंग्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस आदि में प्रकाशित हो चुके थे। राजस्थान में ऐतिहासिक शोध के क्षेत्र में उनके इन पत्रों ने उन्हें भारत के अन्य प्रसिद्ध इतिहासकारों के बीच लोकप्रिय बना दिया।उदाहरण के तौर पर, उदयपुर की सरस्वती भवन लाइब्रेरी में श्प्रशस्ति संग्रहश पांडुलिपि की उनकी खोज ने उन्हें कुंभलगढ़ शिलालेख के लापता स्लैब के पूरे पाठ को खोजने में सक्षम बनाया, जिसका उल्लेख उन्होंने अपने शोध पत्र 'द फ्रैगमेंटरी सेकंड स्लैब ऑफ कुंभलगढ़ इंस्क्रिप्शन, वी.एस. 1517 एंड द ओरिजिन ऑफ द गुहिलोट्स' में किया था।डॉ. शर्मा की यह विशेषता थी कि गंभीर शोध में लगे रहने के साथ-साथ उन्होंने एक शिक्षक के रूप में भी उच्चतम स्तर बनाए रखा। वे अक्सर अपने छात्रों को मेवाड़ के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों पर ले जाते थे और उन्हें अपनी खोजी पद्धतियों और स्रोत सामग्री के परीक्षण से परिचित कराते थे, जिसमें रिकॉर्ड, ताम्रपत्र, पांडुलिपियाँ और शिलालेख शामिल थे। समय के साथ, उनके प्रयासों से एम.बी. कॉलेज, उदयपुर में अपना एक समृद्ध संग्रहालय बन गया, जिसमें उनके छात्रों द्वारा मेवाड़ के घने जंगलों के बीच मंदिरों के खंडहरों और सुनसान स्थलों से खोजे गए शिलालेख, मूर्तियाँ, सिक्के और नक्काशीदार पैनल आदि रखे गए थे।जैसा कि हम जानते हैं, भारत में कोई अन्य राज्य ऐसा नहीं है जिसका 7वीं शताब्दी से निरंतर इतिहास रहा हो और यह स्वाभाविक ही था कि मेवाड़ अपने असमान पठार पर बिखरी हुई ऐतिहासिक स्रोत सामग्री के मामले में असाधारण रूप से समृद्ध हो। उदयपुर में रहते हुए, डॉ. शर्मा ने इसके कोने-कोने का दौरा किया।[14]

ऐतिहासिक स्मारकों और उनके खंडहरों के बीच बिताए गए जीवन भर के समय ने उन्हें उनके इतिहास और उनके आसपास के मिथकों से पूरी तरह परिचित करा दिया। 1963 में, प्रो. जी.एन. शर्मा राजस्थान विश्वविद्यालय के इतिहास और भारतीय संस्कृति विभाग में शामिल हुए, जहाँ उनके सौम्य व्यक्तित्व, विनम्र स्वभाव और विशाल ज्ञान का प्रभाव तुरंत महसूस किया गया। 1975 में उन्हें राजस्थान विश्वविद्यालय के नवनिर्मित श्राजस्थान अध्ययन केंद्रश के पहले मानद निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया,

जिसकी वे एक संक्षिप्त अवधि को छोड़कर 1992 तक देखरेख करते रहे। 1974–77 के दौरान, उन्होंने विभाग में प्रोफेसर एमेरिटस के रूप में कार्य किया। उन्होंने एक मिडिल स्कूल के हेडमास्टर से लेकर एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में प्रोफेसर तक का लंबा सफर तय किया था, जो पूरी तरह से उनकी ईमानदारी और उनके प्रिय विषय के प्रति तल्लीनता से तय की गई एक सम्मानजनक यात्रा थी, जिसमें उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया था।[15]

गोपीनाथ शर्मा ने राजस्थान इतिहास लेखन को देशी रियासतों की सीमाओं से सर्वप्रथम बाहर निकालकर विषय वार अध्ययन का सूत्रपात किया। उन्होंने गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के बाद के इतिहासकारों का ध्यान राजनीतिक स्वरूप से हटाकर राजस्थान के इतिहास के सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप की ओर आकृष्ट किया।[16]

डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने विभिन्न कृतियों पर काम किया जिनकी सूची इस प्रकार है–

1. मेवाड़ एण्ड द मुगल एम्परर्स (1951, 1961)
2. दी मुगल इनफ्लूएन्स इन मेवाड़
3. ग्लोरिज ऑफ मेवाड़ (1953)
4. ए बिबलिओग्राफी ऑफ मिडिवल राजस्थान (1974)
5. सोशल लाइफ इन मिडिवल राजस्थान
6. राजस्थान स्टडीज (1970)
7. ए चेप्टर ऑफ राजस्थान–दी कम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (1970)
8. ए चेप्टर ऑफ राजस्थान स्टेट कम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (1972)
9. राजस्थान थ्रू दी एजेज, वाल्यूम–2 (1994)
10. राजस्थान का इतिहास, स्रोत (1972, 1994)
11. मेवाड़–मुगल सम्बन्ध (1976)
12. राजस्थान का इतिहास (1976–1981)
13. ऐतिहासिक निबन्ध (1985)
14. हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन राजस्थान (1985)
15. आधुनिक राजस्थान का इतिहास (1994)
16. राजस्थान का स्वतंत्रता का इतिहास (1987)
17. राजस्थान की संस्कृति का इतिहास (1990)
18. बांसवाड़ा का स्वतन्त्रता का इतिहास (1970)
19. हकीकत बहीड़ाज वाल्यूम 1, 2, 3 (1993–1995)
20. कविराज श्यामलदास एण्ड वीर विनोद (1987)

सन् 1991 में मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर ने डॉ. गोपीनाथ शर्मा को मेवाड़ शोध संस्थान के निदेशक पद पर नियुक्त किया। चार वर्ष की अल्पावधि में इन्होंने तीन हकीकत बहियों को सम्पादित किया, यह महत्त्वपूर्ण रिकार्ड राजस्थान के इतिहास की सामग्री को अत्यधिक समवेत किया हुआ है जिसमें मेवाड़ के महाराणाओं के दैनिक कार्यकलापों का विवरण है। साथ ही वायसराय और ब्रिटिश अधिकारियों के मेवाड़ आगमन का विवरण संकलित है।[17]

ऐतिहासिक चिन्तन की परम्परा में डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने अबुल फजल की अपेक्षा नैणसी को प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण माना है।[18] डॉ. शर्मा समग्र रूप से ऐसे इतिहासकार हैं जिन्होंने राजस्थान के इतिहास को एक व्यक्ति, साहित्यकार, कला मर्मज्ञ के अन्वेषणकर्ता के रूप में इतिहास को प्रस्तुत किया। डॉ. शर्मा ने अपने से पूर्व दिग्गज इतिहासकारों के निष्कर्षों को स्वीकार करते हुए मूल स्त्रोतों के आधार पर उसकी विचिकित्सा प्रस्तुत की है क्योंकि इतिहासकार अध्येतव्य काल के लोकाचार और जनजीवन के तथ्यों से सूक्ष्म विषय, राजनीति, समाज, कला, इत्यादि की अन्तर्दृष्टि स्वीकार करता है।[19] जी.एम. यंग के शब्दों में 'तब तक पढ़ते जाना चाहिए जब तक उस काल की आवाजें उससे बातें ना करने लगें।'[20]

डॉ. गोपीनाथ शर्मा की डी.लिट्. उपाधि का प्रमुख विषय सोशल लाइफ इन मिडिवल राजस्थान रहा है जिसमें उन्होंने समाज के हर तबके पर उसके हर क्षेत्र में विस्तार से लिखा है। उन्होंने बताया कि पतंगबाजी राजस्थान में शाहआलम प्रथम और अवध के नवाब से आई। राजस्थान में पहले प्राय: श्आकाश दीपकोंश को उड़ाने की प्रथा थी जो मनोरंजन का धार्मिक एवं सामाजिक पक्ष था। मुगल सम्पर्क से पतंग के उड़ाने में कई परिवर्तन आए और तभी से जयपुर इस शौक का गढ़ बन गया, उदयपुर में इसे निर्जला एकादशी पर उड़ाया जाता है।'[21]

डॉ. शर्मा ने बैराठ की सभ्यता को मौर्यकालीन सभ्यता से जोड़ते हुए बृहद्रथ के पुत्र चित्रांगद मौर्य को चित्तौड़ की स्थापना से जोड़ा है। चित्तौड़ से कुछ दूर मानसरोवर नामक तालाब पर राजा मान का, जो मौर्य वंशी माना जाता है, एक विक्रम सम्वत् 770 का शिलालेख कर्नल टॉड को मिला, जिसमें माहेश्वर, भीम, भोज और मान ये चार नाम क्रमश: दिए हैं। कोटा के निकट कणसवा के शिवालय में एक 795 विक्रम सम्वत् का शिलालेख है जिसमें मौर्य वंशी राजा धवल का नाम है जिससे यह सिद्ध होता है कि मौर्यों का राजस्थान में अधिकार था।[22]

डॉ. शर्मा ने महाराणा फतेहसिंह जी से सम्बन्धित 45 बहियों का खण्ड IV, V में समीक्षाओं का लेखन किया है। महाराणा द्वारा पंचौली जालमचन्द जो नगीनावाड़ी का दरोगा था, को निर्देशित किया गया कि वह प्रतिदिन की घटनाओं का प्रात: से सायं तक का लेखन करे। ये बहियाँ देवनागरी, मेवाड़ी, महाजनी लिपियों में लिपिबद्ध हैं।[23] इन बहियों में राजकुमारियों का विवाह, तलवार बन्दी की रस्म, जागीरदारों द्वारा किया गया कर काभुगतान, 1903 तथा 1911 का दिल्ली दरबार, जिसमें फतेहसिंह सम्मिलित नहीं हुए इत्यादि घटनाओं का विस्तार से वर्णन मिलता है।[24] सन् 1912 में मदन मोहन मालवीय को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय हेतु 1 लाख 50 हजार रुपये दान दिए जाने का उल्लेख है। उन्होंने बताया कि फतेहसिंह के व्यक्तित्व के कारण मदन मोहन मालवीय, रमाकान्त मालवीय, अनन्त आचार्य, कपुरथला महाराजा, दरभंगा महाराजा, फ्रांस के राष्ट्रपति, रूस के मोर्गन, गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य इत्यादि महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का आगमन उदयपुर में उल्लेखनीय था।[25]

रांके और सरकार की तरह, उन्होंने अस्सी वर्ष की आयु पार करने के बाद भी लिखना जारी रखा और एक के बाद एक शोध कार्य तेजी से सामने आए।एक इतिहासकार के रूप में उनकी निष्पक्षता उन कारणों में से एक है जो बताते हैं कि उनके कार्यों को देश भर के इतिहासकारों और विद्धानों के बीच व्यापक सम्मान क्यों प्राप्त है।आज वे एक जीवंत किंवदंती और निर्विवाद रूप से राजस्थान के सबसे प्रतिष्ठित इतिहासकार हैं।

आप The Rajasthan Institute of Historical Research, JaipurऔरMaharana Mewar Research Institute, City Palace, Udaipur के निदेशक भी रहे।

इतिहासकार गोपीनाथ जी शर्मा की विशेषज्ञता:

a. Indian culture,
b. History of Rajasthan,
c. Sources of Rajasthan History-Archaeological, Literary and Archival,
d. Art and Architecture of Rajasthan,
e. Medieval Indian Hisotry, Art and Architecture[26]

विभिन्न शोध पत्रिकाएं या जर्नल्स जिनमें आपके शोध आलेख प्रकाशित हुए –

About 200 papers published on Indian Culture and Rajasthan History in journals and Proceedings of the Indian Historical Records Commission, New Delhi ; Proceeddings of the Indian History Congress, Proceedings of the Rajasthan History Congress; Journals of Indian Hisotory, Trivandum; Indian Historical Quarterly, Calcutta; Proceedings of the International Congress of Orientalists; Modern Review, Calcutta; MaruBharati, Pilani; Shodhpatrika, Udaipur; Proceedings of ItihasParished, Delhi, SamajShastra, Vanasthali, Quarterly Review of Historical Studies, Calcutta; Proceedings of the Seminar on the Medieval Indian History, Chandigarh, Shardul Research Institute, Bikaner; Researcher, Jaipur, Rajasthan University Journal, Jaipur etc.[27]

गोपीनाथ जी शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकें –

1. Mewar and the Mughal Emperors (Shivlal Agrawal and Company, Agra, 1951, 1961)
2. The Mughal Influence in Mewar (Rajasthan University Publication, 1953)
3. Glories of Mewar Shivlal Agrawal and Company, Agra 1974)
4. A Bibliography of Mediaeval Rajasthan (Lakshmi Narain Agrawal, Agra 1965)
5. Social Life in Mediaeval, Rajasthan (Lakshmi Narain Agrawal, Agra, 1968)
6. Rajasthan Studies (Lakshmi Narain Agrawal, Agra, 1970)
7. A Chapter on Rajasthan- The Comprehensive History of India Vol. V (Indian History Congres Publication, 1970)
8. A Chapter on Rajasthan States Comprehensive History of India, Vol. X (Indian History congress Publication, 1972
9. Rajasthan Trough the Ages, Vol. II (Rajasthan Archives Publication, 1994)
10. Rajasthan-kaItihaskeSrota (Hindi Granth Academy, Jaipur 1972, 1994)
11. Mewar-Mughal Sambandh, (Hindi Granth Academy, Jaipur, 1976)
12. Rajasthan-ka-Itihas, Vol. I, (Shivlal and Sons, Agra 1st to 4th edition, 1976-1981)
13. Aitihasik Nibandh, Rajasthan, Jaipur 1985
14. History of Freedom Movement in Rajasthan, (Public Relation Department, Jaipur 1985)
15. Adhunik Rajasthan-ka-Itihas (GranthBharti, Jaipur 1994)
16. Rajasthan-ka-Swatantrata-ka-Itihas, (Rajasthan Archives, Bikaner, 1987)
17. Rajasthan-ki-Sanskrati-ka-Itihas, (Hindi Granth Academy, Jaipur, 1990)
18. Banswara-ka-Swatantrata-kaItihas (Rajasthan Institute of Historical Rescarch Publication, 1970)
19. HaqiqatBahida, Vol I,II,III, Edited, City Palace, Udaipur 1993-1995
20. KavirajShyamal Das and VirVinod, Chopasani, Jodhpur 1997[28]

स्नातक (बी.ए.) तथा स्नातकोत्तर (एम.ए.) स्तर की पाठ्यपुस्तकों के रचयिता–

History of Europe, Antar Rashtriya Sambandh, Vishva Itihas ki Ruprekha, SamajikGyana, Prachin Bharat kaItihas, Bharatiya Itihas ki Ruprekha, Nagarik Shastra, Vartaman Kalin Europe-ka-Itihas, etc.[29]

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. संपादक के.एस.गुप्ता,हुकम सिंह भाटी, राजस्थान के इतिहासकार, प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा (शोध आलेख शीर्षक), प्रो.वी.एस.भटनागर, (शोध आलेख लेखक),पृष्ठ संख्या.29, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, 1997
2. गोपीनाथ शर्मा एवं उनके इतिहास ग्रंथ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, डॉ. संजय कुमार, पृ. 3, 2009, अजमेर।
3. वहीं, पृ. 4
4. ऐतिहासिक विचार शैली प्रो. गंगाप्रसाद मेहता, श्याम सुन्दर दास, पृ. 379
5. प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा के घरेलु संग्रह (नरेन्द्र जी शेलेन्द्र जी शर्मा का संग्रह) से प्राप्त अभिलेख के आधार पर। प्रोफेसर वी.एस.भटनागर ने अपने शोध आलेख में गोपीनाथ जी शर्मा की जन्मतिथि त्रुटिपूर्ण रूप से 3 मई,1909 लिखी।य गोपीनाथ जी शर्मा के पुत्र नरेन्द्र जी शर्मा के साक्षात्कार के आधार पर, उम्र 73वर्ष, 9-01-2026, उदयपुर।
6. राजपूताने का इतिहास गौरीशंकर ओझा, जिल्द 1, प्रथम संस्करण की भूमिका।
7. वही, पृ. 30 गोपीनाथ जी शर्मा के पौत्र शेलेन्द्र जी शर्मा के साक्षात्कार के आधार पर, उम्र 43 वर्ष, 5-01-2026,उदयपुर।
8. दी मेवाड़ : इतिहास तत्व डॉ. गोपीनाथ शर्मा का लेख : चन्द्रशेखर चन्गेरिया 20 जून, 2009, पृ. 1-6
9. राजस्थान के इतिहासकार : डॉ. हुकमसिंह भाटी (सं.) मज्झमिका भाग-2, पृ. 68
10. वही, पृ. 69
11. वही, पृ. 31
12. वही, पृ. 31-32
13. संपादक के.एस.गुप्ता,हुकम सिंह भाटी, राजस्थान के इतिहासकार, प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा (शोध आलेख शीर्षक), प्रो.वी.एस.भटनागर,

(शोध आलेख लेखक),पृष्ठ संख्या.29-30
14. संपादक के.एस.गुप्ता,हुकम सिंह भाटी, राजस्थान के इतिहासकार, प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा (शोध आलेख शीर्षक), प्रो.वी.एस.भटनागर, (शोध आलेख लेखक),पृष्ठ संख्या.30-31
15. संपादक के.एस.गुप्ता,हुकम सिंह भाटी, राजस्थान के इतिहासकार, प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा (शोध आलेख शीर्षक), प्रो.वी.एस.भटनागर, (शोध आलेख लेखक),पृष्ठ संख्या.31
16. द हिस्टोरियन्स ए सोर्सेज ऑफ हिस्ट्री राजस्थान: जी.एन. शर्मा एवं वी.एस. भटनागर (सं.) पृ. 1 , रूप सिंह बारेठ, मिश्रीलाल मांडोत,आधुनिक राजस्थान की महान विभूतियाँ,पृष्ठ सं.225, साहित्यागार, जयपुर, 2021ई.।
17. गोपीनाथ शर्मा एवं उनके इतिहास ग्रंथ एक विश्लेषणात्मक अध्ययन : डॉ. संजय कुमार, पृ. 100, 2009, अजमेर।
18. राजस्थान का इतिहास प्रो. बी.एम. दिवाकर, पृ. 13: रूप सिंह बारेठ, मिश्रीलाल मांडोत,आधुनिक राजस्थान की महान विभूतियाँ,पृष्ठ सं.226
19. गोपीनाथ शर्मा एवं उनके इतिहास ग्रंथ एक विश्लेषणात्मक अध्ययन : डॉ. संजय कुमार, पृ. 414, 2009, अजमेर।
20. आर्थर मारविक, इतिहास का स्वरूप, अनुवादक-लाल बहादुर वर्मा, पृ. 19
21. मिश्रा, उत्तरी भारत में मुस्लिम समाज, पृ. 75-77
22. कुमारपाल प्रबंध, पत्र 30121 ई.ऐ.जि. 19, पृ.55-57 राजपूताने का इतिहास : डॉ. जी.एच. ओझा, भाग-1, पृ. 107-108
23. हकीकत बही जालम चन्द पंचोली पृ. 15
24. वही, पृ. 16-20
25. वही, पृ. 21
26. गोपीनाथ जी शर्मा के निजी संग्रह के अभिलेखों पर आधारित।
27. गोपीनाथ जी शर्मा के निजी संग्रह के अभिलेखों पर आधारित।
28. गोपीनाथ जी शर्मा के निजी संग्रह के अभिलेखों पर आधारित।
29. गोपीनाथ जी शर्मा के निजी संग्रह के अभिलेखों पर आधारित।

****